तीन स्तरों का नियम
(THE LAW OF THREE STAGES)

कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित यह नियम सामाजिक उद्विकास (Social Evolution) की प्रकृति को स्पष्ट करने से सम्बन्धित है। यह नियम कॉम्ट की उस मान्यता को स्पष्ट करता है जिसमें उनका कहना है कि समाज का विकास कुछ निश्चित नियमों के आधार पर ही होता है। कॉम्ट की बौद्धिक प्रतिभा इसी तथ्य से प्रमाणित हो जाती है कि उन्होंने इस नियम का प्रतिपादन अल्पायु में ही कर दिया था। तीन स्तरों के नियम की चर्चा करते हुए कॉम्ट ने बतलाया कि व्यक्ति के चिन्तन करने के तीन स्तर होते हैं अर्थात् विभिन्न समाजों अथवा विभिन्न कालों में व्यक्ति विभिन्न मानसिक अवस्थाओं से गुजरते हुए चिन्तन तथा विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। कॉम्ट ने बतलाया कि प्रत्येक समाज में अधिकांश व्यक्तियों का मस्तिष्क लगभग समान रूप से चिन्तन करता है, इसीलिए इस निश्चित काल में समाज को चिन्तन की किसी एक अवस्था के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

तीन स्तरों के नियम की चर्चा करते हुए कॉम्ट ने लिखा है कि "**हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा तीन विभिन्न सैद्धान्तिक अवस्थाओं से होकर गुजरती है जिन्हें हम आध्यात्मिक अवस्था, अर्द्ध-तात्विक अवस्था एवं प्रत्यक्षवादी अवस्था कह सकते हैं।**"[1] कॉम्ट यह स्वीकार करते हैं कि व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन में कल्पना पर आधारित विश्व के महान सिद्धान्तों और वैज्ञानिक (प्रत्यक्षवादी) तरीकों से चिन्तन करता है। व्यक्तियों द्वारा किये जाने वाले चिन्तन के यह विभिन्न स्तर जब पूरे समूह के चिन्तन में बदल जाते हैं तब सम्पूर्ण समाज के चिन्तन की एक विशेष अवस्था का निर्धारण होता है। कॉम्ट द्वारा व्यक्त विचारों को सरल करते हुए **अब्राहम** एवं **मॉर्गन** ने लिखा है कि, "एक व्यक्ति अपने बचपन में अधिप्राकृतिक (Supernatural) शक्ति के प्रति अन्धविश्वास रखता है और साधारणतया उससे भयभीत भी रहता है। किशोरावस्था में वही व्यक्ति अन्धविश्वासों से मुक्त होकर विश्व के सिद्धान्तों के आधार पर चिन्तन करने लगता है या सामाजिक मूल्यों और नैतिक मापदण्डों को स्वीकार करता है। वृद्धावस्था तक पहुँचते-पहुँचते वही व्यक्ति व्यावहारिक हो जाता है और प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक धरातल पर विचार करने लगता है।"[2]

अब्राहम एवं मॉर्गन द्वारा व्यक्त इन विचारों को यदि हम एक व्यक्ति के जीवन के उदाहरण से समझने का प्रयत्न करें तो देखेंगे कि बचपन में व्यक्ति उन बातों में रुचि रखते हैं जिनमें भूत-प्रेत, परियों या काल्पनिक ईश्वरीय विश्वासों की प्रधानता होती है। युवावस्था में व्यक्ति की रुचियों के केन्द्र में परिवर्तन होने लगता है और वे प्रेम, संघर्ष, आर्थिक अथवा राजनीतिक सिद्धान्तों के सन्दर्भ में चिन्तन करने लगते हैं। यद्यपि इन व्यावहारिक सन्दर्भों में चिन्तन करने के बाद भी युवा पीढ़ी भावनात्मक आधार पर ही चिन्तन करती है इसीलिए **कॉम्ट**

---

1 "Each branch of our knowledge pass successively through three different theoretical conditions, the theological, the metaphysical and the positive stage."
– A. Comte : *Politique Positive*, Vol. IV, p. 9.

2 Abraham and Morgan : *op. cit.*, p. 7.

इस मध्य अवस्था को तात्विक अथवा अर्द्ध-तात्विक चिन्तन स्तर के रूप में स्वीकार करते हैं। वृद्धावस्था तक पहुँचते-पहुँचते व्यक्ति कल्पनावाद और भावनात्मकता को छोड़कर पूर्णतया सामाजिक वास्तविकताओं के आधार पर व्यावहारिक चिन्तन करने लगता है। वह प्रत्येक घटना अथवा क्रिया के परिणामों पर सोच-विचार कर ही निर्णय लेता है। इसे हम चिन्तन का प्रत्यक्षवादी स्तर कह सकते हैं। यदि चिन्तन के विकास को सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में देखा जाये तो भी यह क्रम लगभग इन्हीं अवस्थाओं के रूप में देखने को मिलता है। इस दृष्टिकोण से आवश्यक है कि कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित चिन्तन के तीनों स्तरों की प्रकृति को समझने का प्रयास किया जाये।

(1) **ईश्वरीय अथवा धार्मिक स्तर** (Theological Stage)

ईश्वरीय अथवा ईश्वरवादी स्तर की व्याख्या करते हुए कॉम्ट ने लिखा है कि "चिन्तन की इस प्राथमिक अवस्था में व्यक्ति प्राकृतिक या सामाजिक घटनाओं के कार्य-कारण सम्बन्धों (Causal Relationship) की खोज ईश्वरीय अथवा कल्पनात्मक आधार पर करता है।" कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित इस विचार की व्याख्या हम इन शब्दों में कर सकते हैं कि जब व्यक्ति अथवा समाज चिन्तन की इस प्रथम अवस्था में रहता है तब समाज में घटित होने वाली प्रत्येक घटना के कारणों की खोज वह ईश्वरीय अथवा धार्मिक विश्वासों के आधार पर करता है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी दुर्घटना का शिकार हो जाय और वह इस दुर्घटना के वास्तविक कारण को समझने की जगह ईश्वरीय प्रकोप, भाग्य अथवा किसी अपशकुन को इसका कारण मानने लगे तब उसके चिन्तन के इस स्तर को ईश्वरवादी अथवा धार्मिक स्तर का चिन्तन कहा जायेगा। स्पष्ट है कि चिन्तन का यह स्तर कल्पनावादी होता है। आधुनिक समाजों में भी अनेक व्यक्ति चिन्तन के इसी स्तर पर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि परीक्षा के दिनों में विद्यार्थी कुछ प्रश्न ही पढ़कर परीक्षा देने जाते हैं तथा जब परीक्षा परिणाम निकलता है और वे फेल हो जाते हैं तब उनमें से कुछ या सभी यह सोच सकते हैं कि ईश्वर की इच्छा से ही वे परीक्षा में सफल नहीं हो सके। इस प्रकार जब व्यक्ति घटनाओं के कार्य-कारण का सम्बन्ध ईश्वर या अलौकिक शक्ति से जोड़ने लगता है तब वह ईश्वरीय या धार्मिक अवस्था के स्तर पर रहता है। आगस्त कॉम्ट ने चिन्तन के इस स्तर को तीन विभिन्न उप-स्तरों में वर्गीकृत किया है, जो इस प्रकार हैं :

(1) **जीवित सत्तावाद** (Fetishism) – कॉम्ट का विचार है कि चिन्तन की इस प्राथमिक अवस्था में व्यक्ति प्रत्येक जड़ अथवा चेतन वस्तु में जीवन को स्वीकार करता है। उसका यह विश्वास होता है कि कुछ विशेष अधिप्राकृतिक शक्तियाँ तथा वस्तुओं में विद्यमान आत्मा ही उसके व्यवहारों और परिणामों को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति बाढ़ में बह जाता है और किसी पेड़ की शाखा को पकड़कर बच निकलता है तब ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति यदि यह स्वीकार करने लगे कि उस पेड़ की जीवित आत्मा ने ही उसकी रक्षा की, तब ऐसी स्थिति में हम कह सकते हैं कि वह व्यक्ति ईश्वरीय स्तर की आत्मावादी अवस्था में चिन्तन कर रहा है। कॉम्ट का कथन है कि चिन्तन का यह स्तर विकास के आदिम स्तर का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) **बहुदेवत्ववाद** (Polytheism) – कॉम्ट का कथन है कि ईश्वरीय स्तर की इस दूसरी अवस्था में व्यक्ति का धार्मिक चिन्तन वस्तुओं के जीवन तथा आत्मा सम्बन्धी विचारों से हटकर कुछ ऐसे अलौकिक विश्वासों में केन्द्रित होने लगता है जिनका सम्बन्ध अनेक

देवी-देवताओं से होता है। चिन्तन की इस अवस्था में व्यक्ति न केवल तरह-तरह की जादुई शक्तियों में विश्वास करने लगता है बल्कि वह यह भी मानने लगता है कि विभिन्न क्षेत्रों में उसकी सभी क्रियाएँ किसी-न-किसी देवी-देवता की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का ही परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, निर्धनता का कारण लक्ष्मी का प्रकोप, अतिवृष्टि या अनावृष्टि का कारण इन्द्र का प्रकोप, आँधी-तूफान का कारण पवन का प्रकोप आदि मान्यताएँ चिन्तन के इसी स्तर को स्पष्ट करती हैं।

(3) **एकेश्वरवाद** (Monotheism) – धार्मिक अथवा ईश्वरीय चिन्तन की इस अन्तिम अवस्था में कॉम्ट यह स्वीकार करते हैं कि अलग-अलग प्रकार की घटनाओं के पीछे विभिन्न देवी-देवताओं को कार्य-कारण के रूप में स्वीकार करने के कुछ समय पश्चात् व्यक्ति में यह विश्वास होने लगता है कि उसके समस्त व्यवहारों का संचालन विभिन्न देवी-देवताओं से न होकर किसी एक केन्द्रित शक्ति अथवा सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा से ही होता है। इस प्रकार जब व्यक्ति समस्त प्रकार की प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं के कार्य-कारण के रूप में एक ईश्वर की शक्ति को ही स्वीकार करता है तब वह एकेश्वरवाद के चिन्तन की अवस्था के अन्तर्गत होता है। कॉम्ट के मतानुसार, धार्मिक स्तर (Theological Stage) में ये तीनों अवस्थाएँ (प्रेतवाद, बहुदेवत्ववाद और एकेश्वरवाद) एक के बाद एक के क्रम से आती हैं।[1]

(II) तात्विक अथवा अमूर्त स्तर (Metaphysical Stage)

कॉम्ट द्वारा बतलायी गयी चिन्तन की यह दूसरी अवस्था एक **संक्रमणकालीन अवस्था** है। कॉम्ट के मतानुसार चिन्तन की इस अवस्था का प्रारम्भ यूरोप में सन् 1300 ई. के पश्चात् हुआ और यह अवस्था बहुत अधिक समय तक नहीं रही। तात्विक अवस्था में व्यक्ति के चिन्तन में सैद्धान्तिकता के साथ अमूर्त शक्तियों के विश्वास का भी समावेश रहता है। इसका तात्पर्य है कि चिन्तन की इस अर्द्ध-तात्विक अवस्था में व्यक्ति भौतिक या वास्तविक धरातल पर घटना के कार्य-कारण की खोज करता है किन्तु उसके द्वारा विचार किये गये निर्णयों में अलौकिक शक्तियों के विश्वास का भी कुछ प्रभाव बना रहता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति स्कूटर को तेज गति से चलाने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर यह विचार करे कि दुर्घटना का कारण स्कूटर को अधिक तेज गति से चलाना अथवा ब्रेक कमजोर होना था तो इसका तात्पर्य है कि वह तात्विक या भौतिक धरातल पर विचार करने का प्रयास करता है किन्तु अन्त में यदि वह यह भी सोचने लगे कि वह तो रोज ही स्कूटर तेज चलाता था किन्तु आज ईश्वर को यही मंजूर था तो ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति का चिन्तन स्तर अर्द्ध-तात्विक अवस्था में ही माना जायेगा। कॉम्ट द्वारा व्यक्त अर्द्ध-तात्विक अवस्था से सम्बन्धित विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि जब व्यक्ति या समाज के अधिकांश सदस्य सांसारिक सिद्धान्तों के साथ-साथ अधि-प्राकृतिक धरातल पर भी विचार करते हैं तो वे व्यक्ति या वह समाज तात्विक अवस्था में रहता है। कॉम्ट का मत है कि इस अवस्था में व्यक्ति की तार्किक क्षमता का विकास होने लगता है और व्यक्ति ईश्वरवादी चिन्तन को छोड़कर कुछ अमूर्त शक्तियों (Abstract Forces) अथवा सिद्धान्तों को घटनाओं के कार्य-कारण के रूप में देखने लगता है। इसीलिए कॉम्ट ने लिखा है कि **तात्विक अवस्था, धार्मिक अवस्था के बाद और प्रत्यक्षवादी अवस्था के पूर्व की स्थिति है।**

---

1 "The theological stage went through the three phases of Fetishism, Polytheism and Monotheism." –Abraham and Morgan : *op. cit.*, p. 8

(III) प्रत्यक्षवादी स्तर (Positive Stage)

कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत चिन्तन का यह तीसरा स्तर प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक स्तर के नाम से जाना जाता है। कॉम्ट के मतानुसार "उन्नीसवीं सदी का उदय ही प्रत्यक्षवादी स्तर का प्रारम्भ है जिसमें वैज्ञानिक अवलोकन ने कल्पनात्मक चिन्तन पर विजय प्राप्त की।"[1] कॉम्ट का कथन है कि चिन्तन की प्रत्यक्षवादी अवस्था में व्यक्ति किसी घटना के कार्य-कारण सम्बन्धों की खोज न तो दैविक आधार पर करता है और न ही वह भावनात्मक धरातल पर निर्णय लेता है, बल्कि इस अवस्था में **व्यक्ति घटनाओं का विश्लेषण, अवलोकन और परीक्षण के आधार पर करता है**। स्वयं कॉम्ट ने प्रत्यक्षवादी अवस्था की विवेचना करते हुए लिखा है कि, "चिन्तन की इस अन्तिम अवस्था में व्यक्ति का मस्तिष्क निरपेक्ष अवधारणाओं और विश्व की उत्पत्ति सम्बन्धी घटनाओं आदि के कार्य-कारण सम्बन्धों को जानने का प्रयास छोड़कर प्रकृति और समाज के नियमों की क्रमिकता तथा समरूपता के सम्बन्धों की खोज में लग जाता है। इस अवस्था में अवलोकन (observation) और परीक्षण को ही महत्व दिया जाता है। प्रत्यक्षवादी चिन्तन के स्तर पर व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मनुष्य अवलोकन के द्वारा तथ्यों को प्राप्त करके तथा उनके वर्गीकरण और परीक्षण द्वारा तार्किक आधार पर चिन्तन करके ही विभिन्न घटनाओं के कार्य-कारण सम्बन्धों को समझ सकता है।

इस प्रकार कॉम्ट ने मानव-मस्तिष्क के चिन्तन के तीन स्तरों के आधार पर समाज की प्रगति के तीन विभिन्न चरणों को स्पष्ट किया है। कॉम्ट इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि विश्व का प्रत्येक समाज चिन्तन की इन तीन अवस्थाओं से होकर गुजरता है। इसके साथ ही वे यह भी मानते हैं कि किसी एक काल में एक समाज में तीनों प्रकार के चिन्तन के स्तर व्यक्तियों के मध्य पाये जा सकते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि कॉम्ट ने यह भी स्वीकार किया कि **किसी भी समाज में चिन्तन की प्रत्येक अवस्था अपने पूर्ण या समग्र रूप में नहीं पाई जा सकती है**। आगस्त कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित इन विचारों के विश्लेषण के आधार पर **रेमण्ड ऐरों** (Raymond Aron) ने अपनी पुस्तक **'मेन करेण्ट्स इन सोशियोलॉजीकल थॉट'** (Main Currents in Sociological Thought) में चिन्तन के तीन स्तरों के विकास-क्रम में समाजों के विभिन्न स्वरूपों को भी दर्शाने का प्रयास किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण इस प्रकार है :

चिन्तन-स्तर (Stages of Thinking)	बौद्धिकता (Intelligence)	क्रियात्मकता (Activity)	भावनात्मकता (Affectivity)
ईश्वरीय चिन्तन स्तर	जीवित सत्तावाद बहुदेवत्ववाद एकेश्वरवाद	सैनिक सत्ता	अहम् वादी प्रवृत्ति
तात्विक चिन्तन स्तर	अमूर्तता		
प्रत्यक्षवादी चिन्तन स्तर	प्रत्यक्षवाद	औद्योगिक समाज	परार्थवादी प्रवृत्ति

1 "The down of the nineteenth century marked the beginning of the positive stage in which observation predominates over imagination."

– A. Comte, Quoted by *Abraham and Morgan.*

रेमण्ड ऐरों द्वारा व्यक्त इन विचारों से स्पष्ट होता है कि कॉम्ट ने चिन्तन के तीन स्तरों के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की एक ऐतिहासिक रूपरेखा प्रस्तुत की थी। उक्त चार्ट के आधार पर हम कह सकते हैं कि कॉम्ट ने चिन्तन के जिन विभिन्न स्तरों को स्पष्ट किया वे व्यक्ति को बौद्धिकता, क्रियात्मकता और भावनात्मक धरातल पर प्रभावित करते हैं। कॉम्ट के मतानुसार जब समाज में चिन्तन का स्तर ईश्वरवादी होता है तब व्यक्ति बौद्धिक धरातल पर अधि-प्राकृतिक विश्वासों से प्रभावित होता है। इस अवस्था में समाज में सैनिक सत्ता पायी जाती है और व्यक्तियों के मध्य अहम्वादिता की बढ़ी हुई प्रवृत्ति देखने को मिलती है। अन्तिम अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते समाज में वैज्ञानिक चिन्तन उत्पन्न हो जाता है और समाजों का स्वरूप सैनिक सत्ता या राजशाही से अलग होकर औद्योगिक समाजों के रूप में परिवर्तित होने लगता है। प्रत्यक्षवादी अवस्था में व्यक्ति की भावना परार्थवादी (Altruistic) हो जाती है। इस प्रकार कॉम्ट ने चिन्तन के स्तरों का उल्लेख केवल बौद्धिक धरातल पर ही नहीं किया है बल्कि इस सिद्धान्त के द्वारा उन्होंने समाज के स्वरूप और व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों की विवेचना भी की है।